विषय-सूची

भारतीय संदर्भ में प्रस्तावना

परिचय
नए संस्करण के लिए कुछ प्रतिवेदन तथा विचार

एक
मेरे विचारों में क्रान्तिकारी बदलाव कैसे आया
देखा पहले, समझा बाद में, तब पलट कर अपने अवलोकनों की पुष्टि की और सातत्य की अवधारणा तक पहुँची।

दो
सातत्य की अवधारणा
जीवन से जिसकी अपेक्षा रखने के लिए मानव का क्रमविकास हुआ है / मानव की अंतर्निहित प्रवृत्तियाँ / व्यक्ति तथा संस्कृति में सातत्य किस प्रकार काम करता है !

तीन
जीवन का प्रारंभ
प्राकृतिक जन्म तथा सदमे के साथ (ट्रॉमेटिक) जन्म / शिशु की अपेक्षाएँ तथा प्रवृत्तियाँ / गोदी में उठाने का चरण तथा व्यक्ति के शेष जीवन पर उसका प्रभाव / सातत्य तथा उसके बिना शिशुओं तथा बालकों का अनुभव।

चार

बढ़ना

एक सामाजिक प्राणी होने का अर्थ होता क्या है / आत्मरक्षा का स्वाभाविक गुण, स्वावलंबन का विकास, तथा बालक की स्वयं के प्रति जिम्मेदारी का सम्मान करने का महत्त्व / स्वाभाविक सामाजिकता की पूर्व-मान्यता तथा उसका निहितार्थ / बालक स्वयं को कैसे शिक्षित करता है / उसे अपने से बड़ों से किस प्रकार सहायता की ज़रूरत होती है।

पाँच

अत्यावश्यक अनुभवों से वंचित होना

शैशव में जिन अनुभवों से चूके हों जीवन के हर कोने में उनकी अंधी तलाश / मादक द्रव्यों की लत वाले व्यक्ति का रहस्य / मानव पतन संबंधी मिथक / अनुकंपा की स्थिति से दो कदम दूर : बौद्धिक चयन कर पाने की मानव की विकसित क्षमता तथा संस्कारित मानव का सातत्य से अवपतन / चिंतन, ध्यान, कर्मकाण्ड तथा विचार मिटा के अन्य उपायों से राहत।

छह

समाज

सातत्य की अवधारणा से मेल खाने वाली संस्कृतियाँ तथा उससे टकराव में आने वाली संस्कृतियाँ / अनुपालना, विश्वसनीयता, न ऊबने का अधिकार / आनंद का भला हुआ क्या ?

सात

सातत्य के सिद्धान्तों को पुनः लागू करना

यौन तथा ''स्नेह'' : शारीरिक संपर्क की दो आवश्यकताओं के बीच अंतर करना / आवश्यकता बनी रहने के साथ ही उसकी आपूर्ति की संभावना भी बनी रहती है / सातत्य के नज़रिए से हमारी ज़रूरतों को समझना तथा उनको परिभाषित करना / हमारी वर्तमान जीवन शैली में मौजूद अवरोध / शिशुओं के अधिकार / सातत्य को पुनः स्थापित करने के उपलब्ध अभिगम / इन सिद्धान्तों को शोध में लागू करना।